



# झारखण्ड गजट

## असाधारण अंक

### झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित

---

संख्या- 472      राँची, बुधवार,      14 आषाढ़, 1938 (श०)  
5 जुलाई, 2017 (ई०)

---

**कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग।**

-----  
संकल्प

9 नवम्बर, 2016

कृपया पढ़ें:-

1. उपायुक्त, गिरिडीह के पत्रांक-1854/गो०, दिनांक 8 दिसम्बर, 2015
2. कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड, राँची का आदेश सं०-10524, दिनांक 11 दिसम्बर, 2015, संकल्प सं०-10525, दिनांक 11 दिसम्बर, 2015, संकल्प सं०-412, दिनांक 19 जनवरी, 2016 एवं आदेश सं०-2697, दिनांक 29 मार्च, 2016
3. विभागीय जाँच पदाधिकारी-सह-संचालन पदाधिकारी के पत्रांक-322, दिनांक 29 जुलाई, 2016

**संख्या-5/आरोप-1-86/2015 का.-9500--** श्री गौरांग महतो, झा०प्र०से० (कोटि क्रमांक- 855/03, गृह जिला-प० सिंहभूम), के अनुमंडल पदाधिकारी, बगोदर-सरिया, गिरिडीह के पद पर कार्यावधि से संबंधित आरोप उपायुक्त, गिरिडीह के पत्रांक-1854/गो०, दिनांक 8 दिसम्बर, 2015 द्वारा प्रपत्र- 'क' में आरोप

गठित कर उपलब्ध कराया गया है । प्रपत्र- 'क' में श्री महतो के विरुद्ध निम्न आरोप प्रतिवेदित किये गये हैं:-

**आरोप सं०-1.** दिनांक 7 दिसम्बर, 2015 को उपायुक्त, गिरिडीह को सूचना मिली कि श्री गौरांग महतो, तत्कालीन अनुमंडल पदाधिकारी, बगोदर-सरिया शराब के नशे में वाहन चेकिंग के क्रम में लोगों के साथ मारपीट एवं अभद्र भाषा का प्रयोग कर रहे हैं । सूचना प्राप्त होने पर उपायुक्त द्वारा उप विकास आयुक्त, निदेशक, एन०ई०पी० के संयुक्त जाँच-दल एवं दो चिकित्सकों को घटनास्थल पर भेजा गया। संयुक्त जाँच-दल द्वारा दिनांक 8 दिसम्बर, 2015 को जाँच-प्रतिवेदन समर्पित किया गया, जिसमें अंकित लोगों के बयान से स्पष्ट है कि श्री महतो द्वारा लोगों के साथ मारपीट एवं अभद्र भाषा का प्रयोग किया गया है ।

**आरोप सं०-2.** श्री महतो के विरुद्ध उपायुक्त, गिरिडीह को पूर्व में भी शिकायत प्राप्त हुई थी कि वे शराब के नशे में कार्यालय जाते हैं और कर्मियों के साथ अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं ।

**आरोप सं०-3.** उपायुक्त, गिरिडीह द्वारा दिनांक 1 दिसम्बर, 2015 को भी बगोदर उच्च विद्यालय स्थित मतपेटी के रिसिविंग सेंटर में श्री महतो को शराब के नशे में पाया गया था । उस समय उन्हें अंतिम चेतावनी दी गयी थी ।

**आरोप सं०-4.** श्री महतो द्वारा सरकारी कार्यों के निष्पादन के क्रम में आम व्यक्तियों के साथ शराब के नशे में अशोभनीय व्यवहार किया जाता है ।

**आरोप सं०-5.** पूर्व में भी अनुमंडल कार्यालय, बगोदर-सरिया के कतिपय कार्यालय कर्मियों द्वारा लिखित आरोप लगाया गया है कि श्री महतो शराब पीकर कर्मियों के साथ गाली-गलौज करते हुए मारपीट पर उतारू हो जाते हैं ।

**आरोप सं०-6.** श्री महतो का उक्त आचरण सरकारी सेवक आचार नियमावली के प्रतिकूल है ।

उक्त आरोपों हेतु विभागीय आदेश सं०-10524, दिनांक 11 दिसम्बर, 2015 द्वारा श्री महतो को निलंबित किया गया तथा विभागीय संकल्प सं०-10525, दिनांक 11 दिसम्बर, 2015 द्वारा विभागीय कार्यवाही संचालित की गई, जिसमें श्री अशोक कुमार सिन्हा, सेवानिवृत्त भा०प्र०से०, तत्कालीन विभागीय जाँच पदाधिकारी को संचालन पदाधिकारी नियुक्त किया गया । श्री सिन्हा के सांविदिक अवधि समाप्त होने के पश्चात विभागीय संकल्प सं०-412, दिनांक 19 जनवरी, 2016 द्वारा श्री एहतेशामुल हक, सेवानिवृत्त भा०प्र०से०, विभागीय जाँच पदाधिकारी को संचालन पदाधिकारी नियुक्त किया गया । मामले की समीक्षा करते हुए विभागीय आदेश सं०-2697, दिनांक 29 मार्च, 2016 द्वारा श्री महतो को निलंबन मुक्त किया गया ।

संचालन पदाधिकारी के पत्रांक-322, दिनांक 29 जुलाई, 2016 द्वारा विभागीय कार्यवाही का जाँच प्रतिवेदन उपलब्ध कराया गया। विभागीय कार्यवाही के दौरान श्री महतो द्वारा समर्पित बचाव बयान का सार निम्नवत् है:-

1. श्री महतो का कहना है कि घटना के दिन ये नशे में बिल्कुल नहीं थे। इन्होंने लोगों के साथ मारपीट एवं अभद्र भाषा का प्रयोग नहीं किया है। जाँच-दल के अनुमंडल आने की जानकारी इनको नहीं दी गयी। दिनांक 7 दिसम्बर, 2015 को ये अपने निवास से कार्यालय जा रहे थे। रास्ते में इन्होंने कुछ मोटरसाईकिल पर तीन-तीन लोगों को जाते हुए देखा। उन्हें विनम्रतापूर्वक समझाते हुए कहा कि आजकल दुर्घटनाओं की संख्या में वृद्धि हो रही है, अतः हेलमेट का उपयोग अवश्य करें।

2. अपने 15-16 साल के कार्यकाल में ये कभी भी नशे में कार्यालय नहीं गये हैं और न ही किसी कार्यालय कर्मी से अभद्र व्यवहार किये हैं। इनके योगदान के कुछ दिनों बाद एक टीम अपर समाहर्ता, गिरिडीह, निदेशक, डी०आर०डी०ए० तथा एन०आर०ई०पी० के नेतृत्व में कार्यालय कर्मियों द्वारा उपायुक्त, गिरिडीह को दिये गये आवेदन के संबंध में जाँच के लिए आई थी, जिसके समक्ष कार्यालय कर्मियों द्वारा इनके विरुद्ध कोई शिकायत नहीं की गयी। जाँच-टीम के जाने के बाद इनसे कोई कारण-पृच्छा नहीं की गयी, जिससे स्पष्ट है कि कार्यालय कर्मियों को इनके साथ कार्य करने में कोई दिक्कत नहीं थी एवं शिकायत गलत था।

3. दिनांक 1 दिसम्बर, 2015 को भी बगोदर उच्च विद्यालय स्थित मतपेटी के रिसिविंग सेंटर में नशे में पाये जाने संबंधी आरोप बिल्कुल निराधार है। दिनांक 1 दिसम्बर, 2015 को इस संबंध में कोई बात नहीं हुई थी।

4. इनका कहना है कि आरोप निराधार है। इसके पूर्व भी विभिन्न लोक सभा चुनाव, विधान सभा चुनाव तथा त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में R.O. या A.R.O. के रूप में इनके द्वारा कर्तव्य का सही ढंग से निर्वहन किया गया है।

5. अंत में श्री महतो का कहना है कि इनके ऊपर लगाये गये सारे आरोप निराधार हैं। प्रतिवेदित अवधि में ये त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में अनुमंडल पदाधिकारी के अलावे निर्वाची पदाधिकारी भी थे। इन्होंने अपने पूरे अनुमंडल क्षेत्र में धारा-144 निषेधाज्ञा भी लागू किया था। इनके कार्यकाल में ही तीसरे तथा चौथे चरण का मतदान शान्तिपूर्वक संपन्न हुआ।

श्री महतो के बचाव बयान पर उपायुक्त, गिरिडीह द्वारा पत्रांक-572/गो०, दिनांक 1 अप्रैल, 2016 द्वारा मंतव्य उपलब्ध कराया गया है, जो निम्नवत् है:-

1. अनुमंडल कार्यालय, बगोदर-सरिया के कार्यरत कर्मी अनिमेष कुमार, लिपिक एवं अन्य द्वारा परिवादित किया गया था कि श्री गौरांग महतो द्वारा प्रत्येक दिन कार्यालय में शराब पीकर सभी कर्मियों से गाली-गलौज किया जाता है एवं वे मारपीट पर उतारू हो जाते हैं। इस परिवाद-पत्र के

आलोक में कार्यालय आदेश ज्ञापांक-1094/गो०, दिनांक 27 जून, 2015 द्वारा त्रिसदस्यीय पदाधिकारियों की टीम गठित कर जाँच कराई गई। जाँच-प्रतिवेदन के आलोक में श्री महतो का आचरण एक सरकारी पदाधिकारी के अनुरूप नहीं कहा जाएगा।

2. श्री लक्ष्मण प्रसाद मण्डल, नगर केशवारी, थाना-सरिया, जिला-गिरिडीह द्वारा भी दिनांक 7 दिसम्बर, 2015 को श्री महतो के विरुद्ध शराब के नशे में रोड पर आने-जाने वाले यात्रियों के साथ लाठी से मारपीट करने का आवेदन पत्र उपायुक्त को दिया गया। इससे भी इनका आचरण सरकारी पदाधिकारी/कर्मचारी के विरुद्ध परिलक्षित होता है।

3. उप विकास आयुक्त, गिरिडीह के पत्रांक-289, दिनांक 7 दिसम्बर, 2015 द्वारा प्रतिवेदित किया गया है कि दिनांक 7 दिसम्बर, 2015 को उनके द्वारा अनुमंडल पदाधिकारी, बगोदर-सरिया के उक्त कृत्य की जाँच हेतु निदेशक, राष्ट्रीय नियोजन कार्यक्रम, गिरिडीह एवं सदर अस्पताल के दो डॉक्टर (1) डॉ० ए०पी०एन० देव एवं (2) डा० सोहेल अख्तर के साथ जाँच किया गया। जाँच के दौरान अनुमंडल पदाधिकारी, श्री महतो के कार्यकलाप से लोगों में काफी आक्रोश थी। शराब पीकर कार्यालय आने की पुष्टि अन्य लोगों के द्वारा भी की गयी। प्रतिवेदन में यह भी अंकित किया गया कि श्री महतो के आचरण सरकारी सेवक के आचरण के प्रतिकूल होने के साथ-साथ स्वेच्छाचारिता का परिचायक है।

4. उक्त तथ्यों के आलोक में श्री महतो का आचरण एक जिम्मेवार पदाधिकारी के रूप में सही नहीं है।

उपायुक्त, गिरिडीह द्वारा प्रतिवेदित मंतव्य के प्रसंग में श्री महतो द्वारा पूरक बचाव बयान दिनांक 19 मई, 2016 समर्पित किया गया, जो निम्नवत् है:-

1. अनुमंडल कार्यालय, बगोदर-सरिया में कार्यरत अनिमेष कुमार, लिपिक तथा अन्य कर्मों द्वारा इनके विरुद्ध जो शिकायत उपायुक्त महोदय को किया गया था तथा संबंधित मामले की जाँच के लिए जिला से आये टीम के सदस्य अपर समाहर्ता, गिरिडीह, निदेशक, डी०आर०डी०ए० तथा एन०आर०ई०पी० निदेशक के समक्ष कार्यालय कर्मियों द्वारा जवाब दिया गया कि अनुमंडल कार्यालय, बगोदर-सरिया में पदस्थापित अनुमंडल पदाधिकारी एवं सभी कर्मियों के बीच उनके व्यवहार को लेकर गलतफहमी हो गयी थी, क्योंकि अनुमंडल पदाधिकारी के दिनांक 12 जून, 2015 को प्रभार ग्रहण के पश्चात उनके एवं कार्यालय कर्मियों के बीच सामंजस्य नहीं रहने एवं क्रोधित होने के कारण उनलोगों को ऐसा महसूस हुआ कि अनुमंडल पदाधिकारी नशे में हैं। इसलिए कर्मियों द्वारा क्षमायाचना करते हुए अनुमंडल पदाधिकारी, बगोदर के ऊपर लगाये गये आरोप से मुक्त करने हेतु अनुरोध किया गया। इसके आधार पर श्री महतो को कहना है कि उपायुक्त, गिरिडीह के द्वारा इस संबंध में दिया गया मंतव्य सत्य से परे है।

2. श्री लक्ष्मण प्रसाद मंडल, नगर केशवारी, थाना-सरिया, जिला-गिरिडीह द्वारा उपायुक्त, गिरिडीह को समर्पित आवेदन पत्र के प्रसंग में श्री लक्ष्मण प्रसाद मंडल द्वारा संचालन पदाधिकारी को प्रेषित पत्र की प्रति उपलब्ध कराया गया है, जिसके अनुसार, दिनांक 7 दिसम्बर, 2015 की घटना के दिन पूर्व अनुमंडल पदाधिकारी, बगोदर-सरिया द्वारा इन पर कोई कार्रवाई नहीं की गयी तथा उस दिन उपायुक्त को दिये गये आवेदन में इनके द्वारा जो पक्ष रखा गया था, वह दूसरे आदमियों से सुनने के आधार पर रखा गया था। श्री मंडल के उक्त पत्र के आधार पर श्री महतो का कहना है कि उपायुक्त, गिरिडीह के द्वारा मंतव्य प्रतिवेदन में दिया गया मंतव्य सत्य से परे हैं।

विभागीय कार्यवाही के जाँच प्रतिवेदन में संचालन पदाधिकारी द्वारा अंकित मंतव्य निम्नवत् है:-

1. श्री महतो के विरुद्ध आरोप के संबंध में कहा गया है कि जाँच के दौरान वहाँ उपस्थित लोगों से बयान लिया गया, जिससे पता चलता है कि श्री महतो द्वारा लोगों के साथ मारपीट एवं अभद्र भाषा का प्रयोग किया गया है, लेकिन साक्ष्य के रूप में न तो किसी व्यक्ति के बयान की प्रति और न ही संयुक्त जाँच प्रतिवेदन संलग्न किया गया है।

2. आरोपी पदाधिकारी के बचाव बयान पर उपायुक्त, गिरिडीह द्वारा समर्पित मंतव्य प्रतिवेदन के साथ दो साक्ष्य संलग्न किया गया है-

प्रथम साक्ष्य- श्री लक्ष्मण प्रसाद मंडल, नगर केशवारी, थाना-सरिया, गिरिडीह का अभ्यावेदन दिनांक 7 दिसम्बर, 2015 है, जिसमें अनुमंडल पदाधिकारी द्वारा शराब के नशे में मारपीट करने और गाली गलौज करने का उल्लेख करते हुए प्रशासनिक कार्रवाई करने की माँग की गयी है।

द्वितीय साक्ष्य- अनुमंडल कार्यालय, बगोदर-सरिया में कार्यरत कर्मी अनिमेष कुमार लिपिक एवं अन्य पाँच कर्मियों द्वारा उपायुक्त को दिया गया शिकायत पत्र है, जो गोपनीय शाखा में 26 जून, 2015 को प्राप्त है। इस पत्र में अनुमंडल पदाधिकारी, श्री गौरांग महतो के द्वारा प्रत्येक दिन कार्यालय में शराब पीकर सभी कर्मियों को गाली गलौज किये जाने एवं मारपीट पर उतारू होने का उल्लेख किया गया है। इस कारण कर्मियों में रोष होने एवं किसी के साथ कभी भी अप्रिय घटना होने की संभावना की मद्देनजर अनुमंडल कार्यालय में प्रतिनियुक्त सभी कर्मियों की प्रतिनियुक्ति समाप्त करने एवं अनुमंडल पदाधिकारी के विरुद्ध सरकार को प्रतिवेदित करने का अनुरोध किया गया है। साथ ही, दिनांक 27 जून, 2015 से कार्यालय कार्य को बंद किये जाने का भी उल्लेख है।

3. श्री महतो द्वारा उक्त दोनों साक्ष्यों के प्रतिवाद स्वरूप श्री लक्ष्मण प्रसाद मंडल द्वारा तथाकथित लिखित एक आवेदन पत्र, जो संचालन पदाधिकारी को सम्बोधित है, प्रस्तुत किया गया है। इसमें कहा गया है कि अनुमंडल पदाधिकारी ने उन पर कोई कार्रवाई नहीं की थी। उस दिन दिये गये आवेदन में दूसरे आदमियों से सुनी गयी बातों के आधार पर पक्ष रखा गया था। इस प्रसंग में

संचालन पदाधिकारी का कहना है कि श्री लक्ष्मण प्रसाद मंडल द्वारा दिनांक 7 दिसम्बर, 2015 को दिये गये अभ्यावेदन एवं संचालन पदाधिकारी को दिये गये अभ्यावेदन की लिखावट में प्रथम दृष्ट्या एकरूपता नहीं है और कथन में सख्त विरोधाभास है। ऐसा प्रतीत होता है कि संचालन पदाधिकारी को सम्बोधित श्री लक्ष्मण प्रसाद मंडल द्वारा लिखित आवेदन पत्र किसी अन्य ने लिखा है। इसकी सम्पुष्टि हैंड राईटिंग एक्सपर्ट द्वारा ही की जा सकती है।

4. इसी प्रकार श्री महतो द्वारा प्रतिवाद स्वरूप समर्पित दूसरा साक्ष्य, जो अपर समाहर्ता, गिरिडीह को सम्बोधित है, मूल रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह पत्र भी संदेहात्मक प्रतीत होता है, क्योंकि दोनों पत्रों में लिखावट/हस्ताक्षर में एकरूपता नहीं है।

5. यह उल्लेखनीय है कि किसी व्यक्ति का प्रथम बयान महत्वपूर्ण होता है। बाद में दिया गया बयान/प्रतिवाद एक सोची समझी नीति के तहत दिया जाता है।

6. उपर्युक्त वर्णित तथ्यों से स्पष्ट है कि आरोपी पदाधिकारी के शराब पीने संबंधी कोई ठोस साक्ष्य तथा चिकित्सीय जाँच प्रतिवेदन संलग्न नहीं किया गया है। मात्र अभ्यावेदन एवं उपायुक्त के प्रतिवेदन में इसका उल्लेख है। ऐसी स्थिति में शराब पीये रहने का आरोप प्रमाणित नहीं माना जा सकता है। बदजुबानी एवं मारपीट किये जाने की पुष्टि होती है।

आरोपित पदाधिकारी श्री महतो के विरुद्ध आरोप, इनके बचाव बयान तथा संचालन पदाधिकारी पदाधिकारी के जाँच-प्रतिवेदन -सह-मंतव्य की समीक्षा की गयी। समीक्षा में पाया गया कि संचालन पदाधिकारी द्वारा श्री महतो के शराब पीये रहने का आरोप प्रमाणित नहीं माना गया है, क्योंकि इस संबंध में चिकित्सीय जाँच प्रतिवेदन साक्ष्य के रूप में अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत नहीं किया जा सका है। इनके विरुद्ध बदजुबानी एवं मारपीट किये जाने का आरोप प्रमाणित माना गया है। संचालन पदाधिकारी का मंतव्य तर्कपूर्ण है, जिसे स्वीकार किया जा सकता है।

अतः समीक्षोपरांत, श्री महतो को झारखण्ड सरकारी सेवक (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियमावली, 2016 के नियम-14(i) के तहत निन्दन का दण्ड अधिरोपित किया जाता है।

झारखण्ड राज्यपाल के आदेश से,

**दिलीप तिकी,**

सरकार के उप सचिव।

-----